इन्द्रवज्रा छन्द

इन्द्रवज्रा छन्द के प्रत्येक चरण में 11-11 वर्ण होते हैं। यह एक सम वर्ण वृत्त छन्द है। इसके अन्त में दो गुरु वर्णों का होना आवश्यक है। अर्थात इन्द्रवज्रा 11 वर्ण और 18 मात्राओं का छन्द है, जिसके अन्त में दो गुरु वर्ण होते हैं।

उदाहरणतया:- मैं राज्य की चाह नहीं करूँगा।
है जो तुम्हें इष्ट, वही करूँगा॥

कवित्त छन्द:- साधारण अर्थ में कविता को 'कवित' कहते हैं। किन्तु विशेष अर्थ के रूप में कवित्त एक छन्द है। यह एक वार्णिक छन्द है। इस छन्द के प्रत्येक चरण में 31 वर्ण होते हैं, तथा हर चरण में गुरु होता है। 16 और 15 पर यति होती है।

उदाहरण:- ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहन वारी
ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहत है

पहले चरण में 16 वर्ण तथा
दूसरे चरण में 15 वर्ण हैं, अर्थात 16 और 15 पर यति है तथा अन्त में गुरु है।

भुजंग प्रयात:- अर्थात जिस छन्द के प्रत्येक चरण में चार-चार यगण होते हैं। यह एक प्रकार का वार्णिक छन्द है। इसमें 12 वर्ण

Scanned with CamScanner

और 20 मात्रायें होती हैं। संक्षेप में यों कहें कि यह एक समवर्णिक छन्द है, जिसमें चार यगण, ~~[illegible]~~ 12 वर्ण तथा 20 मात्रायें होती हैं —

उदाहरण — बना लो जहाँ वहीं स्वर्ग होगा।
स्वयंभूत थोड़ा कहीं स्वर्ग होगा।।
खलों को कहीं भी नहीं स्वर्ग होगा।
भलों के लिए तो यहीं स्वर्ग होगा

यगण - अर्थात <u>ISS</u> - यह सर्प की भाँति चलता प्रतीत होता है, जैसे कि इसके नाम से ही ध्वनित होता है — । भुजंग अर्थात सर्प।